आदिवासियों का शोषण, पलायन और जागरण : डॉ पद्मा शर्मा की कहानियों के विशेष सन्दर्भ में

श्रीमती प्रियंका राजपूत' सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय पथरिया, दमोह (म.प्र.)

भारत में आदिवासियों को प्रायः 'जनजातीय लोग' के रूप में जाना जाता है। आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि में बहुसंख्यक व गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक है जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में यह बहुसंख्यक हैं, जैसे मिजोरम। भारत सरकार ने इन्हें भारत के संविधान की पांचवी अनुसूची में "अनुसूचित जनजातिया" के रूप में मान्यता दी है। अक्सर इन्हें अनुसूचित जातियों के साथ एक ही श्रेणी "अनुसूचित जाति एवं जनजाति" में रखा जाता है।

भारत सांस्कृतिक विविधताओं का देश है। यहाँ पर विभिन्न जातियाँ निवास करती हैं। जिनमें आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आदिवासी हमारी प्राचीन संस्कृति के परिचायक है, जो समाज से अलग रहने के कारण पिछड़ गये हैं। आज आदिवासी समाज संकट के कठिन दौर से गुजर रहा है। जल, जंगल और जमीन की समस्या, लोक संस्कृति की समस्या, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्त्रियों से जुड़ी समस्याएँ दिनो–दिन गंभीर होती जा रही है। शोध के इस अध्याय में आदिवासियों के निवास स्थान, संस्कृति, उनकी समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, 'आदि' और 'वासी'। 'आदि' का अर्थ 'मूल' और 'वासी' का अर्थ 'निवासी' है। अतः आदिवासी से तात्पर्य धरती के मूल निवासी से हैं, जो घने जंगलों, ऊँचे पर्वतों और दुर्गम घाटियों में निवास करते हैं। आदिवासी उन्हें कहते हैं जो सभ्य जगत से दूर पर्वतों और जंगलों में दुर्गम स्थानों पर निवास करते हैं, समान जनजातीय बोली का प्रयोग करते हैं तथा अधिकांशतया माँस–भक्षी तथा अर्द्ध–नग्न अवस्था में रहते हैं। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है - आदिकाल से देश में रहने वाली जाति। आदिवासी लेखक माया बोरसे के अनुसार– आदिवासी समाज ऐसा समाज है जिसके नाम में ही उसकी पहचान छिपी हुई है। आदिवासी शब्द के लिए 'मूलनिवासी' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है अर्थात् 'आदिवासी समाज इस भूमि का मूल निवासी है और वही इस भूमि का उत्तराधिकारी भी है।' इन्होंने आदिवासियों को भारत का मूल निवासी माना है।

गिलिन और गिलिन ने अपनी रचना 'कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी में जनजाति की परिभाषा देते हुए लिखा है– 'स्थानीय जनजातीय समूहों को ऐसा समवाय जनजाति कहा जाता है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है एक सामान्य भाषा का प्रयोग करता है, तथा जिसकी सामान्य संस्कृति है। कृषि उन्नति के लिए आदिवासियों ने महत्वपूर्ण काम किये हैं यथा अदलबदल फसलें उगाना – उर्वरकता बनाये रखने के लिए फसलें और जमीन परती छोड़ना या उसका चारागाही उपयोग के द्वारा।

जिस जंगल को बचाए रखने के लिए उन्होंने अपने जीवन को दाँव पर लगा दिया उसी जंगल में अन्य लोगों को पदस्थ कर दिया गया जिन्हें न वहाँ के पेड़– पौधों की जानकारी थी न वहाँ के मार्गों की और न ही वहाँ के जीवन के बारे में लोग जानते थे। अन्य लोगों की वहाँ उपस्थिति और आर्थिक संसाधन के अभावों के कारण आदिवासियों का एक बड़ा वर्ग पलायन करने को विवश है। वे घरों में काम ढूँढते हैं। पर आदिवासी होने के कारण उसे घर का काम भी नहीं मिल पाता।

'वे उसके पास आए और उससे पूछने लगे–तुम्हारा नाम क्या है? वह बोला–साब भरोसा। पूरा नाम क्या है? यह सुनकर कुछ अचकचा गया, पूरा नाम तो वह वोट डालते समय ही बताता था आज पूरा नाम बताकर क्या करेगा? क्या जात के आधार पर ही काम मिलेगा? वह बोला–भरोसा....आदिवासी। आगे के शब्द सुखदेव के कानों में जैसे ही पड़े वे चौंक गए। अरे ये तो ना पानी पिलाने का है ना ही चौके में जाने का। अभी तक की सारी अच्छाइयां जो सुखदेव ने भरोसे में देखी थीं, एक ही झटके में खंडित हो गयीं। उन्होंने निराश होकर बस अन्त में इतना ही कहा हमें जरूरत होगी तो हम बुला लेंगे।'(बीच का धमचोला– रेत का घरौंदा कहानी संग्रह पृष्ठ 54–55)

महिलाएँ शहरों और महानगरों में दाई, आया का काम करती है, ईंट भट्टों में मजदूरी करती हैं, घरों में चौका बर्तन आदि का काम भी करती हैं इन जगहों पर इनका शारीरिक और मानसिक शोषण होता है। उनके आदिवासी होने से भी परहेज किया जाता है। इसी तरह महिलाओं को भी काम ढूँढने में परेशानी होती थी। आर्थिक परेशानी इतनी कि मजबूरी में वे कम रुपयों में भी काम करने को तैयार हो जाती थीं।

'तुम कौन बिरादरी हो वह सिकुड़ कर आधी हो गई उसे लगा कि किसी बिच्छु ने उसे डंक मार दिया। उसे याद आया कि खेत मे नंगे पैर काम करते–करते घास का तिनका पैर में चुभ जाता है, जिससे

शरीर के रोगंटे खड़े हो जाते हैं। धरती पर निगाह जमाते हुए बोल पड़ी आदिवासी। मालकिन हालांकि साथ वाली बाई से कल ही पूछ चुकी थी लेकिन फिर भी बुरा सा मुँह बनाते हुए बोली अरे अब मैं तुझसे क्या काम करवाऊँगी। ऐसा व्यक्त करके वे सोच रही थी कि ये और कम पैसो में पट जायेगी। गेंदा – गठरी बनी जड़वत् थी। उसने सूनी याचक आँखों से मालकिन की ओर देखा और कहा बैनजी कोयऊ काम पे रख लेऊ, मै भौत परेशानी में हो। मालकिन ने कुछ दया दिखाई और दो सौ रूपये माहवार पर उसे झाड़ू–पौछा पर रख लिया था।'

(हड़ताल भी जरूरी थी– 'अहल्या' पत्रिका हैदराबाद,मार्च 2007 पृष्ठ 29)

बहुराष्ट्रीय निगमों, उनको मॉडल मानने वाले देशी पूंजीपतियों और बिचौलियों ने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर अपने लॉकर और बैंक बैलेंस मजबूत कर लिए। पदमा शर्मा की कहानियों के पात्र जानते हैं कि उनका शोषण हो रहा है पर आर्थिक दबाव के कारण वे सब कुछ सहन करते हुए भी काम करते रहते हैं। बाल श्रमिक संतो मालकिन के यहाँ काम करती है। काम पूरा होने के बाद समय मिलने पर सन्तो मालकिन की हमउम्र लड़की के साथ खेलती है। मालकिन की लड़की खेल खेल में उसे डंडा मारती है। बदले में वह भी उसे एक चांटा मार देती है। मालकिन क्रोधित होकर कहती हैं–"क्या जरूरत थी चुनमुन को मारने की ? तुम लोगों का जितना ख्याल रखो उतना ही सिर पर चढ़ जाते हो। तुम्हारी जो 'औकात' होती है वह कभी नहीं जाती। जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो। हमारे ही टुकड़ों पर पलती है और हमारे ही बच्चों को मारती है। छोड़ देते हैं माँ–बाप कीड़े–मकोड़ों की तरह।"(काठमहल – मधुरिमा,परिशिष्ट दैनिक भास्कर)

घर परिवार के लिए त्याग की भावना, बहनों के विवाह की चिंता और भाई के भविष्य के कारण स्वावलंबी रामप्यारी अनचाहे विवाह के लिए तैयार हो जाती है। "वह कहने लगी–ष्आंटी जी मुझे माफ कर देना मेरे पास और कोई चारा नहीं था। मैं कब तक मुहल्ले के लड़कों से अपने आपको बचाती? कब तक छोटी बहने बैठी रहती और कब तक माँ–बाप पर बोझा बनती उसी खानदान में जाऊँगी तो कोई उँगली नहीं उठाएगा। एक ही घर में निबाह हो जाएगा।"(रेत का घरौंदा– रेत का घरौंदा संग्रह पृष्ठ 112)

आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के परिणाम स्वरूप आये परिवर्तनों से आदिवासी स्त्री भी वंचित नहीं रही है। बदलते समय में आदिवासी महिला में भी बदलाव आया है। शिक्षा के प्रचार के कारण देश और समाज में आये नवीन परिवर्तनों ने आदिवासी नारी की जीवन शैली और जीवन दृष्टि को सर्वथा नवीन आयाम प्रदान किया है। कामबाली बाई को अंदेशा है कि उसके पति को कोई बीमारी हो गयी है, इसलिये वह उससे दैहिक सम्बन्ध नहीं बनाती। वह मालकिन को बताती है – फिर वह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुये बोली – "बस जईपे से वो ऊधम कर रओ है, वो कैते कि तेरे कामवारन से संबंध होंगे तईसे तू मोसे बात नई करती। वो मोये धमक देत है कि तेरो पीछो करोंगो और तेरे काम वालन से लड़के आओंगो। बैनजी मैं कल जइसे नई आई कि वो तुम लोगन से लड़तौ और इल्जाम लगातो। फिर ज्यादई ऊधम करन लगो तो भईया ने थाने में बिठा दओ।"(कैसे बचेगा मल्लो बाई का वो– संवेद वाराणसी, जुलाई–दिसंबर 2008, पृष्ठ 226)

परेशानी में वे पति को गरियाती हैं लेकिन बीमारी में अपने पति की समर्पण भाव से सेवा करना और अपने जोड़े गए धन को भी पति पर खर्च करना नारी के अद्भुत सामर्थ्य और साहस का परिचय देते हैं। "सिसकते हुए बोली–बैनजी डॉक्टरन ने तो जवाब देदओ है। तुम सबन की दुआ लग जाय तो बच जायेगो। मोड़ा–मोड़िन के व्याए कर लेगयो। अब तो वैनजी खूब कसम खातै कि अब तोय परेसान नहीं करउंगो, तोए तनखा लाके देऊगो, कोई औरत के पास नई जाऊंगों। लेकिन अब का हो सकते? फिर एक आशा भरी निगाहों से वह पूछती है , बैनजी जा बीमारी की कौन इलाज नईए का ?"(अन्तहीन काली छाया, अभिनव कदम, मऊ , दिसंबर 2009 से मई 2010, पृष्ठ 226)

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए पेट भरना सबसे बड़ा और शाश्वत प्रश्न है। भूख से जब कोई मौत हो जाती है तब समाज में हाहाकार मच जाता है और सहयोगियों की लंबी कतार लग जाती है। जबकि जीते जी कोई भी दाने तक देने को तैयार नहीं होता। (मजमा कहानी – जनसत्ता दीपावली विशेषांक 2013) आदिवासी स्वावलंबी होते हैं। झूठ बोलना, बेईमानी, धोखा देना उनके व्यक्तित्व से परे है। वे श्भूख का सौदाश भी नहीं करते भले ही अन्न को मोहताज बने रहें।

"रामरतिया ने बिफरते हुए कहा– ष्पहले हमें लगा था तुम किसी पत्रिका में तस्वीर छपवाओगे पर ये न पता था कि हमारी भूख को गरीबी बदनसीबी और कुपोषण के तमाशे में बदल दोगे। मैं यह सब न होने दूँगा ... यहाँ से हम जैसे अधनंगे लोगों की तस्वीर ले जाओगे फिर सरकार से पैसा ऐंठोगे और ये तस्वीरें बेचकर हमारी भूख का सौदा दूसरों से करोगे।हमारे दुःख से पैसा कमाओगे ... तुम्हारा मार्केट चलेगा और हमारा दिल जलेगा। निराश फोटोग्राफर को पसीना छूटने लगा था।" (कहानी भूख का सौदा)

"पद्मा शर्माश की कहानी 'लोकतंत्र के पहरुए' हमारे समाज में लोकतंत्र के नाम पर होने वाली छिछली और गंदी राजनीति की पोल खोलती है। लोभ, लालच, प्रलोभन, भ्रष्टाचार, धांधली के साथ सत्ता पक्ष और विरोधी पक्ष के बीच चलने वाले घमासान में आम इंसान कैसे शिकार होता है, यह इस कहानी को पढ़कर समझना बहुत आसान है। दलगत राजनीति जाति के नाम पर कैसे लोगों को मूर्ख बनाती है और जनता के भरोसे नेता बन गए दबंग किस तरह उनका फायदा उठाते हैं, शोषण करते हैं और अंततः उन्हें उनके हाल पर छोड़ देते हैं, इस सच्चाई को इस कहानी में खोल कर रखा गया है। कहानी अपने भाषा शिल्प में शोषक और शोषित दोनों की मनरूस्थिति को उजागर करने में सफल रही है।

राजनीति में भी अब आदिवासियों की पैठ हो गयी है। वे चुनाव के हथकण्डे समझने लगे हैं। इसलिए घूँघट की आड़ में कई बार महिलाओं से वोट डलवा देते हैं।(कहानी इलेक्शन, जलसमाधि एवं अन्य कहानियाँ) जगना पंडित जी के चुनाव के लिए भीड़ इकट्ठी करना, तालियाँ बजवाना, नारे बुलवाना, लोगों को डराना–धमकाना, मारना–पीटना, बूथ लूटना सब काम करता था।

"जगना पंडितजी का खास आदमी था। आदिवासी टोले में खूब चलती थी उसकी। जब–जब चुनाव होते उसे बड़े अदब से बुलाया जाता। प्रचार के दिनों में तीन–चार महीने उसे पंडितजी और जनता से जो सम्मान मिलता था उसी सम्मान की यादों की जुगाली करते वह पाँच साल बिता देता था। वह जहाँ भी जाता पंडित जी के कारण उसे लोग हाथों हाथ लेते थे। ऐसे में उसकी छाती फूल जाती और पंडित जी के लिए उठाये गए जोखिमों की भरपाई हो जाती थी।"(लोकतंत्र के पहरुए– हमरंग डॉट कॉम संग्रह पृष्ठ 144)

पद्मा शर्मा के पात्रों में प्रतिरोध की क्षमता भी है। जगराम में इतना साहस है कि वह पंचायती बोर में नेता जी के टिल्लू पम्प की लेझम हटा आता है। पानी के बिना मरना तो पानी के लिए क्यों न मरा जाए। (कुकुरमुत्ता, माटी पत्रिका बाँदा, सितंबर 2013 पृष्ठ 64)

भूख से हुई मौत को देखने नेता जी के आगमन के लिये स्कूल को हटाकर हैलीपैड बनाने के विरोध के स्वर भी मिलते हैं। (कहानी हैलीपैड)

बादामी भी एड्स पीड़ित पति को हाथ तल नहीं लगाने देती। वह कहती है–"का कह रई हो बैन जी, कोई लुगाई ना चाहे तो मर्द की का हिम्मत। के वो उंगरिया भी छू सकें और आज जमाने में हम सब जनी इतना तो हक राखत है के जब अपनीऊ मर्जी होय, तब ही मर्द को पास आन देय ऐसो भी ना कर सकें तो काहे की पढ़ाई–लिखाई और काहे की तरक्की।"

(उसकी आजादी– पाखी, नोएडा अगस्त 2010 पृष्ठ 35)

क्षेत्रीय भाषा के भी दर्शन उनकी कहानियों में मिलते हैं।

"सात खाई ताती और सात खाई सद।
जेठे बड़े को नौतो करो सात खाई तब।
सास के से साग ल्याइ सात खाई तब।
झांसी को वैद बुला दो भूख नइएँ अब।" (उसकी आजादी)

"खाट ले लो, खाट ले लो चार में से तीन नहीं हैं।
खाट ले लो, खाट ले लो सिरयापाटी एक नहीं है।
खाट ले लो, खाट ले लो बीच का धमचोला नहीं है।"
(बीच का धमचोला)

'सहायक ग्रन्थ सूची'

1 डॉ हरिश्चन्द्र उप्रेती –भारतीय जनजातियाँ एक सामान्य परिचय .राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर ।
2 डी. एन. मजूमदार, रेसेज एंड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस बॉम्ब ।
3 प्रमोद भार्गव, सहरिया आदिवासी जीवन और संस्कृति, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत ।
4 रवीन्द्रनाथ मुकर्जी –सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, विवेक प्रकाशन दिल्ली ।
5 डॉ श्रीनाथ शर्मा –जनजातीय समाजशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल ।
6 डॉ ब्रह्मदेव शर्मा आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ।
7 डॉ एस के सोनी राजस्थान के आदिवासी, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर ।
8 जीवन की नई सुबह –कहानी संग्रह, शब्द सृष्टि प्रकाशन दिल्ली ।
9 रेत का घरौंदा– कहानी संग्रह, नवचेतन प्रकाशन दिल्ली ।
10 जलसमाधि एवं अन्य कहानियाँ– कहानी संग्रह, शिल्पायन दिल्ली ।
11 समकालीन हिन्दी कहानी में सांस्कृतिक मूल्य– डॉ पद्मा शर्मा रजनी प्रकाशन दिल्ली ।